धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

मई- 2012

* एक मैं हूं, एक मेरी ज़िन्दगी की शाम है
* हमें इन्तज़ार करना पड़ेगा
* बातचीत द्वारा समस्याओं का हल
* कल्याण सत्संग से लाभ
* ऐसे थे शगुन (चाचा)
* भाग्य को भूलिए आगे बढ़िए
* जीवन प्रसंग
* चण्डीगढ़ में सत्संग

एक मैं हूं, एक मेरी ज़िन्दगी की शाम है

एक मैं हूं, एक मेरी जिन्दगी की शाम है,
खुद से मिलने का यह अवसर ही मेरा संग्राम है।
डूब जाता हूं मैं साधन में गहरी हद तलक,
क्या यह निकली जिन्दगी? जिसको मैंने समझा था फलक,
मोक्ष पाना नीचता से ही सत्य धर्म का काम है।
खुद को समझा मैं जिस्म था, और रहा उसका गुलाम,
उसकी ही अपना ख़्वाहिशों पर, करता रहा खुद को नीलाम,
दास होकर मैं सुखों का, पाया आत्मिक पतन अन्जाम है।
चारों जगतों के बड़े सर पर मेरे उपकार हैं,
कर्तव्य अपने निभाने से मिलते हमें अधिकार हैं,
कल्याण अपनी आत्मा का, कल्याण में जो आकर हुआ,
सत्संग की सभाओं ने दिल को मेरे हैं छुआ,
आता रहूंगा ता उमर हर साल, यह दिल के मेरा इल्हाम है।
नीच सुख अनुरागों ने रिश्ता मेरा मिथ्या अशुभ से है किया,
दोहरा सा जीवन जी के मैंने, खुद से है धोखा किया,
दिल पे तो रावण राज है, लब पे मेरे राम है।
मोक्ष से विकास तक का, यह सफर है भारी मेरा,
निज आत्मा के दाग धोलूं, परिशोध भी है जारी मेरा,
कल से बेहतर जी रहा हूं, आज कुछ आराम है।
क्या करूं क्या न करूं, अब वक्त ही है क्या बचा।
देखकर दुनिया के स्वार्थ, मैं फिर भी रहता हूं खिंचा,
मोह का बन्धन यह मेरा रूह का कोहराम है।
आके इस संसार में मैंने भी कमाएं हैं हीरे मोती,
साथ में नहीं कुछ जाएगा, कफन में जेब नहीं होती,
हंसना नहीं, बसना भी यहां, मेरा बराय नाम है।
सौभाग्य से जब से मिले, मुझको गुरू हैं देवात्मा,
सोचती और जागती सी, मेरी जी रही है आत्मा,
करती जो विज्ञान मूलक, सोच का एहतराम है।
आर्दश उच्च जीवन के मेरे सामने रहते हैं अब,
विकास पथ का बनकर राही, रास्ते फलांगता हूं मैं जब।
भगवान की ही श्रद्धा से भरा रहता दिल सुबह और शाम है।

ओम प्रकाश आदर्श

धर्म जीवन

खण्ड 25 अंक 5

मई – 2012

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

हमें इन्तज़ार करना पड़ेगा

यह शब्द मनुष्य जगत के शिरोमणी, मनुष्य जाति के सरताज, विकास क्रम के अद्वितीय आविर्भाव देवात्मा ने फरमाए थे।

"हमें इन्तज़ार करना पड़ेगा" या हम इन्तज़ार करेंगे। परम पू० भगवान देवात्मा ने 13 सितम्बर 1927 (जब अभी मेरे जैसे पैदा भी नहीं हुए थे) को दुपहिर के समय, श्रद्धेय श्रीमान धर्म बल जी, श्रीमान लाला जानकी दास जी और बख़शी रतन चन्द जी जौहर को सम्बोधन करते हुए यह शब्द कहे थे। गुरू महाराज हित अनुरागी होकर जिस प्रकार अपने लासानी मिशन को संसार के चारों कोनों में फैलाना चाहते थे, शत: शत: आत्मिक अन्धकार और पाप में मरती हुई रूहों का भला करना चाहते थे, उसको अपनी इच्छा अनुसार कुछ भी न होता हुआ देखकर, उनके नुक्स वा अभावों को देखकर, अति दुखी, परेशान वा लाचार होकर यह शब्द कहने के लिए मजबूर हुए और होते रहे। गुरू महाराज एक ओर अपने लासानी रूप और मानवता में अपना उच्चतम स्थान देख रहे थे, अपनी देव ज्योति वा देव तेज की क्षमता को देख रहे थे, दूसरी और वह अपने अद्वितीय देव प्रभावों को उचित मात्रा में प्राप्त करने, उनको दूसरे अधिकारी आत्माओं तक, उनके परम हित के लिए पहुंचाने वाले योग्य जनों का, अपने कर्मचारी जनों का घोर अकाल देख रहे थे, तब हित अनुरागी की अथाह तड़प, उनको ऐसा करने के लिए बार बार बेबस कर रही थी।

बेशक उस समय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज तो देवात्मा सत्गुरू की किसी अंश प्रसन्नता पाकर, अपना जीवन सफल कर परलोक सिधार चुके थे, परन्तु फिर भी जहां तक अनुमान है, श्रद्धेय भाई अमर सिंह जी, श्री कनल जी, श्रद्धेय भाई मोहन देव जी, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी, परलोक वासी श्रीमान निर्मल सिंह जी कोहारवाला, स्वामी गोविन्द राम जी और तीन चोटी के कर्मचारी, जिन्हें गुरू महाराज सम्बोधन कर रहे थे, वह तो वर्तमान थे। उनका जो जीवन स्तर था, उन्होंने गुरू का कारज करके जो जीवन सफल किया, उसका मुकाबला करने का भी कोई साहस नहीं कर सकता। परन्तु उनके संग्राम से, उनके तप और त्याग से, उनके गुरू कारज सम्बन्धी उच्च फलों से, गुरू महाराज अति निराश, दुखी और बेहद परेशानी से पीड़ित रहते थे। जिसको हम सुख अनुरागी अदना आत्मा समझ कर भी अनुभव नहीं कर सकते।

हम इतना तो अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि गुरू महाराज 1927 में अपने मिशन में दर्जनों उच्च कर्मचारी और योग्य जनों की वर्तमानता में इस प्रकार दुखी और निराश थे तो आज अपने अद्वितीय मिशन की दुर्दशा देखकर, उनके घोर दुख और उत्पीड़न का क्या हाल होगा, इस का कुछ अनुमान लगा सकते हैं।

इसी घोर दुख, तड़पन वा निराशा का ही कारण था, कि गुरू महाराज के देव लोग गमन करने पर, उनके द्वारा पैदा किया समाज का समूह जगत, उनकी हिदायत के अनुसार उनकी अर्थी के पीछे शामिल होकर यह भजन गाने के लिए मजबूर हुआ था: -

"हमने तुम को नहीं पहचाना,
हमने तुमको नहीं पहचाना,
हम है नीच सुखों के दास,
तुमरा उच्च लोक में वास
हमरे लिए सम्भव हो किस विध,
रूप तुम्हारा सन्मुख लाना।"

यह एक ठोस हक़ीक़त है, जो उस समय के महारथी यह वाक्य उच्चारन करने के लिए मजबूर थे। हम आज के महा नीच, दुष्ट, महा अपराधी अन्धे, अति अयोग्य वा भृष्ट जन, किस तरह सोच सकते हैं कि हमने गुरू महाराज के रूप को पहचान लिया है। हक़ीक़त यह है कि आज भी उन्हें पहचानने वाला कोई नहीं। उनका प्रकृत रूप देखने वाला कोई नहीं। यदि हम उनका अद्भुत रूहानी रूप देखने के ही पूर्ण अयोग्य है, तो हमारे लिए उनका कोई कारज करना, उनकी महिमा और देव प्रभाव फैलाना उनके कारज पर बलिहार जाना और मरती रूहों को बचाना पूर्ण असम्भव है। इसीलिए उनके मिशन के कारज पर पूर्ण सन्नाटा छाया हुआ है, बल्कि मिशन विरोधी शक्तियों, जो कि नेचर के नियमानुसार ज़रूरी था, के भयानक नाच की भरमार वर्तमान है।

देवात्मा के रूप को पहचाने बिना, कोई उनके साथ सम्बन्ध जोड़ने में सफल नहीं हो सकता, उनके प्रभाव प्राप्त नहीं कर सकता, उनके प्रभावों को दूसरों तक पहुंचाने का गुरू मिशन का अद्वितीय कारज नहीं कर सकता। जब गुरू महाराज ने उपरोक्त दुख वा निराशा भरे शब्द फरमाए कि "हमें इन्तज़ार करना पड़ेगा" उस समय गुरू महाराज का यह मतलब था कि उन्हें उस समय तक इन्तज़ार करना पड़ेगा, जब तक उन्हें सच्चे अर्थ में पहचानने वाले जन पैदा नहीं हो जाते।

गुरू महाराज ने उक्त वाक्य फरमाने के बाद अपने बहुमुल्य रोशनी का दान भी दिया था कि जिससे उक्त प्रकार के लोग पैदा हो सकते हैं, जिनकी गुरू महाराज को इन्तज़ार है।

गुरू महाराज ने फरमाया कि "हमें इन्तज़ार करना पड़ेगा कि कब कोई ऐसे जन पैदा होते हैं, कि जिनके निज के साधन चलें, वह अपने खिलाफ सोचें और लिखें।"

इस फरमान में गुरू महाराज ने तीन उच्च कर्मचारियों के आगे यह सत्य साफ कर दिया कि मेरा काम केवल और केवल वह जन कर सकते हैं, जो तीन शर्तें पूरी कर सकते हैं।

1) वह निज के साधन लगातार कर सकते हों अर्थात् वह देव प्रभाव पा सकते हों। जैसे पानी के बिना कोई इन्सान खेती नहीं कर सकता उसी प्रकार

देव प्रभावों के बिना कोई कर्मचारी न अपना जीवन बचा सकता है न औरों तक कोई प्रभाव पहुंचाकर उच्च परिवर्तन का काम कर सकता है।

2) कर्मचारियों, गुरू मिशन में काम करने वालों का सबसे बढ़कर ध्यान अपने जीवन की ओर जाना चाहिए। वह अपने विरूद्ध सोच सकते हों, देख सकते हों। मनुष्य नीचता का पुतला है। जिस वर्कर को अपना पाप परायण, नीचता का पुलंदा रूप नज़र नहीं आता वह उस पर विचार वा चिन्तन को अपना लक्ष्य नहीं बना सकता और वह गुरू महाराज का कारज नहीं कर सकता।

3) तीसरी अहम अवश्यकता अपनी नीचता पर निरन्तर लिखने का साधन करने की है। जो अपनी नीचता पर निरन्तर सारी उमर लिखने को अपना नहीं सकता, वह कभी भी अपने महा भयानक अंह अनुराग का बोधी नहीं हो सकता। जिसको अपने अंह अनुराग का गहराई में बोध नहीं, वह गुरू महाराज का कोई ठोस कारज नहीं कर सकता। वह अपने जीवन को और गुरू मिशन को भी बेपनाह हानि पहुंचा सकता है जिसका शब्दों में पूरा पूरा ब्यान नहीं हो सकता।

अपनी नीचता के अति विशाल और गहरे क्षेत्र में गुरू की ज्योति में प्रतिदिन लगातार विचार किए बिना और अपनी नीचता को साफ साफ लिखने का लगातार सारी उमर साधन किए बिना किसी भी वर्कर को: -

1) अपने प्रकृत अंह का, अपनी मनमुखता का महा भयानक रूप तनिक भी साक्षात दिखाई नहीं दे सकता। वह अपने भीतर और बड़ी बड़ी योग्यताएं रखकर भी घोर मिथ्या के अन्धकार में रहने के लिए बेबस रहता है। वह जो कुछ नहीं, अपने आपको वैसा समझता है और वास्तव में वह जो कुछ है, उसे दिखाई नहीं देता।

2) उसको देव प्रभाव प्राप्त नहीं हो सकते। देव प्रभावों तक रसाई हासिल करने की शर्त पूरी नहीं कर सकता।

3) उसको गुरू का रूप परम महान कहकर भी, वास्तव में उसका कुछ अंश भी दिखाई नहीं देता। गुरू को असल रूप में कुछ भी नहीं देख सकता।

4) उसका गुरू के साथ कोई सम्बन्ध ही स्थापन नहीं हो सकता, वह उनसे जुड़ने का नियम ही पूरा नहीं कर सकता।

5) उसको अपने जीवन का सत्य लक्ष्य ही दिखाई नहीं देता।

6) वह विद्या, धन, सम्पति, मान, यश, पद उपाधि, सम्मान और सुख आदि के ही पूर्ण अधिकार में रहकर अपना समस्त जीवन, देवात्मा की शरण के महा सौभाग्य को पाकर भी बर्बाद करने के लिए लाचार रहता है।

इसलिए देवात्मा ने श्रद्धेय श्रीमान धर्मबल जी जैसी हस्ती के सामने, जिनके बारे श्रद्धेय कनल जी ने फरमाया था, "एक धर्मबल हज़ार कनल पैदा कर सकता है, परन्तु हज़ार कनल एक धर्मबल पैदा नहीं कर सकता"। अर्थात उक्त शर्तें पूरी करने वाले जनों की मिशन को अवश्यकता है। जब तक ऐसे जन नहीं मिलेंगे देवात्मा ने फरमाया कि "हम इन्तज़ार करेंगे"।

गुरू महाराज ने जगह जगह यही फरमाया है कि हमें श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी जैसे जनों की अवश्यकता है।

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने उपरोक्त नियम निरन्तर अपने जीवन में पूरे किए थे। वह आखिरी सांस तक हररोज़ एक डेढ़ घण्टा अपने नीच जीवन पर लिखने का साधन, अन्य साधनों के अतिरिक्त पूरा करते थे। तभी वह गुरू मिशन का कारज करने के योग्य हुए। वह आप तो उच्च जीवन के शिख़रों को छू गए, वह गुरू मिशन के लिए 20 या इससे भी अधिक कर्मचारी पैदा कर गए। वह अपने संग्राम से 100 के करीब स्थानों पर साधनों की प्रक्रिया जारी कर गए।

आज भी गुरू मिशन को उक्त शर्तें पूरी करने वाले श्रद्धावान और त्यागी जनों की अतिशय अवश्यकता है। गुरू मिशन का सूरज जैसा प्रकाश आज एक मामूली दीए की तरह टिमटिमा रहा है। उसके अन्दर के तेल और बाती लोप हो रहे हैं। मिशन बुरी तरह बर्बाद हो रहा है। इसलिए गुरू मिशन के लिए आज भी उक्त नियमों को पूरा करने वाले सौभाग्यवान जनों की गुरू महाराज को व्याकुलता से इन्तज़ार है।

आज भी जो लोग गुरू मिशन को सच्चे दिल से आगे ले जाने के वलवले रखते हैं, कुछ जोशीले नौजवान वा बड़ी उमर के कुछ लोग हैं जो ऐसे अरमान रखते हैं, जो बड़े होनहार प्रतीत होते हैं, उन्हें जागना चाहिए और गंभीरता से सोचना चाहिए कि गुरू महाराज कैसे जनों का अपने मिशन के लिए इन्तज़ार कर रहे हैं? हमारी गुरू के प्रति सच्ची श्रद्धा और कृतज्ञता का प्रबल तकाज़ा है कि हम गुरू की इस आन्तरिक परेशानी और निराशा को, उनकी इन्तज़ार को खत्म करने के लिए उक्त नियमों की पूर्ति में आगे बढ़कर जुट जाएं, ताकि किसी अंश हम गुरू मिशन के योग्य बन सकें। अपने सर्व्वोच्च भले और गुरू महाराज की सच्ची खुशी के किसी अंश भागी बन सकें।

नेचर का नियम पुकार पुकार कर कह रहा है कि इस इन्तजार ने तो खत्म होना ही है, क्यों न इसे खत्म करने के अधिकार और सौभाग्य को हम पा सकें। गुरू की कृपा अब किसी सौभाग्यवान पर हो सके।

"असूल की बात यह है कि काम करने वाले यह सोचें कि मैं अपने लिए नहीं आया, समाज के लिए आया हूं, देवात्मा की इच्छा पूरी करने के लिए आया हूं, दूसरों के हित के लिए आया हूं।"

(बलदेव सिंह)

आदमी का अंहकार उसको दृष्टि से अन्धा, मति से भ्रम पूर्ण और गति से रुकावट में डाल देता है। अच्छे अच्छे, सफल और समझदार लोग अंहकार के कारण गल्त निर्णय ले लेते हैं। अंहकार चिन्ता को प्रभावित करके क्रिया को दोष पूर्ण बना ही देता है। अंहकारी व्यक्ति हर वह काम करना चाहता है, जिससे उसके अंहकार को और बल मिले। उसकी स्थितियों से निपटने से ज़्यादा रूचि अपनी अंहकार पूर्ण प्रतिष्ठा में रहती है।

बातचीत द्वारा समस्याओं का हल

देव समाज के मासिक अंग्रेजी अखबार "विज्ञान मूलक धर्म" के मई मास, सन् 1991 के अंक में एक लेख छपा था, जिसमें बताया गया है कि परस्पर बातचीत के द्वारा समस्याओं का हल करना एक सभ्य तरीका है और एक दूसरा जंगली तरीका यह तरीका यह भी है कि आपस में "तू-तू, मैं-मैं" हो, अदालतों में धक्के खाए जाएं और लाठी गोली की नौबत पहुंच जाए।

परस्पर बातचीत के करने से पहले अनुकूल वातावरण बनाने की आवश्यकता है। एक पक्ष दूसरे पक्ष को हराने की नीयत न रखे। दोनों पक्ष समानुभूति और निर्लिपतता की भावना रखें। कई बार हम अपने विचारों और अपनी राय के इतने पक्षपाती हो जाते हैं कि हमें उनमें कोई गलती या त्रुटि ही दिखाई नहीं देती। जहां कट्टरवाद और अड़ियल- पन आ जाता है, वहां बातचीत सफल नहीं हो सकती। "मैं ठीक और दूसरा गलत" - यह भावना बड़ी खतरनाक है।

यदि एक पक्ष अपनी ही बात कहता रहे और दूसरे की सुने न, तो ऐसी बातचीत का कोई लाभ नहीं। एक दूसरे की निन्दा और आलोचना करना आसान है। जब एक पक्ष अपनी ही ध्वनि को सुनता है और दूसरों की बातों के प्रति बहरा हो जाता है, तो बातचीत का प्रयोजन सिद्ध नहीं होता।

बातचीत करते समय अपनीं कमी को देखना दूसरों के गुणों को सामने रखना, सही तर्क और उच्च भावों की अपील करना बहुत जरूरी है। इस प्रकार का ज़िकर इसमें किया गया है। पॉलिटिकल दुनिया में और धर्म की दुनिया में भी परस्पर मतभेद की कोई कमी नहीं है। विविध धर्ममतों ने जितने लड़ाई-झगड़े पैदा किए है, उनकी कोई सीमा नहीं है।

डाक्टर इक़बाल ने लिखा था-

"मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना"

परन्तु अब बहुत से लोगों की यह धारणा हो गई है कि मज़हब ही है सिखाता आपस में बैर रखना। हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति डा० राधा कृष्णन् ने तो कह ही दिया था कि यह दुनिया आराम से रहती यदि कोई मज़हब न होता। एक और विचार-शील लेखक Swift ने कहा है कि लोग धर्म को लेकर वाद-विवाद करेंगे। लेख लिखेंगे। लड़ाई-झगड़े करेंगे, मरेंगे। परन्तु धर्म को शान्तिपूर्वक जिएंगे नहीं।

विविध धर्म-मतों के इतिहास का अध्ययन बताता है कि समय के साथ एक एक धर्म-मत में कई कई सम्प्रदाय पैदा हो जाते हैं। ईसाईयें में कैथोलिक और प्रोटैस्टैण्ट हैं। मुसलमानों में शिया और सुन्नी हैं। हिन्दुओं में सैकड़ों सम्प्रदाय है। फिर इन सम्प्रदायों में किसी सिद्धान्त की व्याख्या को लेकर परस्पर मतभेद हो जाते हैं। जो ताकतवर सम्प्रदाय होता है, वह अपने से कमज़ोर सम्प्रदाय को कुचल डालने की काशिश करता है। आवश्यकता इस बात की है कि विविध सम्प्रदाओं में लोकतान्त्रिक दृष्टिकोण अपनाया जाए और उनमें परस्पर सद्भाव का वातावरण हो। किसी को विधर्मी और क़ाफ़िर कह कर उसे जाति-पाति और देश से निकालने की शिक्षा देना ओर Witch Hunting करने पर उतारू होना बहुत घृणित कर्म है। विश्व का दो हज़ार वर्ष का इतिहास इस बात का साक्षी है कि बलवान पक्ष ने निर्बल पक्ष को

विधर्मी और काफिर कह कर उस पर बहुत जुलम किए हैं। परस्पर सहिष्णुता, "जीओ और जीने दो" की भावनाओं के बगैर दुनिया में काम नहीं चलेगा।

दूसरे विश्व युद्ध के बाद जो Berline Wall (बर्लिन की दीवार) खड़ी करके पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी को अलग अलग कर दिया था और माता पिता और उनकी सन्तान, पति पत्नी, भाई बहन आदि एक दूसरे से जुदा हो गए थे, आखिर उस बर्लिन की दीवार को गिरा दिया गया और पूर्वी ओर पश्चिमी जर्मनी एक हो गए। यह पालिटिकल नेताओं का दृष्टान्त है। जो धर्म का दावा करते हैं, उनका क्या हाल है? क्या वह परस्पर सम्बन्धों में बर्लिन की दिवार नहीं खड़ी कर रहे?

चीन ने भारत-भूमि का बहुत बड़ा भाग अपने कब्ज़े में किया हुआ बताया जाता है, फिर भी भारत का प्रधान मंत्री चीन जाता है और चीन का प्रधान-मन्त्री भारत आता है। दोनों मिल बैठ कर बात करते हैं। व्यापार, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद, विज्ञान, टैकनालेजी आदि में सहयोग करते हैं। और सीमा-विवाद को भी बातचीत द्वारा हल करने का प्रोग्राम बनाते हैं। उसको परस्पर सहयोग में रोक नहीं बनने देते।

मज़हब की यह त्रासदी और विडम्बना रही है कि उसमें साधारणत: कट्टरपन और धर्मान्धता आ जाती है। लचीलापन, और "give and take" की भावना का अभाव हो जाता है। सच्चे धर्म का तो काम यह होना चाहिए कि वह तोड़ने का नहीं, बल्कि जोड़ने का काम करे। किसी ने सच कहा है कि सभ्यता की सबसे बड़ी निशानी यह है कि जो लोग हम से भिन्न मत रखते हैं हम उनके साथ सच्चे अमन ओर शान्ति से रहने के योग्य बन सकें। प्रसिद्ध फ़िलास्फ़र जार्ज सान्तायना ने कहा है कि शायद इन्सान की सब से बड़ी महिमा, गरिमा और प्रतिष्ठा इस बात में है कि वह अपनी त्रुटियों को देख सके। और प्रसिद्ध लेखक कार्यालय ने तो यहां तक कह दिया कि मनुष्य का सब से बड़ा अपराध ही यह है कि वह अपने किसी अपराध को ही देखने के अयोग्य हो जाए।

हमारा सौभाग्य है कि हमें भगवान देवात्मा ने ऐसा देव धर्म प्रदान किया है जो सारी दुनिया में परम एकता लाना चाहता है। जिसकी शिक्षा यह है कि मनुष्य अपने आत्मा के भले के लिए अपनी त्रुटियों को देखे और उनको दूर करे। दूसरों के गुणों को देख कर मुक्त-कण्ठ से उनकी सराहना करे और अपने विरोधी जन को भी कभी घृणा न करे, बल्कि सदा उनका हित चाहे और यथा अवसर और यथा शक्ति उनकी सहायता करे। भगवान देवात्मा अपने प्रति दिन के निज के साधन में अपने जिस जीवन संगीत का गान किया करते थे, उसके कुछ पद यह हैं:-

सकल विभागों में नेचर के,
उच्च गति प्रद परिवर्तन हो,
नीच गति हो विनष्ट दिन दिन,
श्रेष्ठ मेल उनमें उत्पन्न हो।

बरट्रंड रसल ने कहा था कि इस्लाम धर्म में कई बातें अच्छी हैं, परन्तु मुसलमान लोग उन अच्छी बातों पर न चल कर इस्लाम धर्म को बदनाम करते हैं। हम देखें देव धर्म के प्रति हमारी कथनी और करनी में अन्तर तो नहीं है?

सुरजीत बराड़

कल्याण सत्संग से लाभ

इस सत्संग से जो लाभ हुआ उसे शब्दों में व्यक्त करना ही कठिन लगता है। एक एक सभा के बाद जो भाव पैदा होते रहे उन्हें खड़े होकर ब्यान भी करती रही परन्तु आज की माता-पिता से सम्बन्धित सभा में बैठते ही ऐसी एक बात से दिल पकड़ा गया, परेशान हो गया, जिसे बीते 33 वर्ष हो चुके हैं। बहुत स्वंय पर लताड़ पड़ी बहुत आंसू निकले तुम माँ की कातिल हो अपने शरीर में कहीं थोड़ा सा दर्द हो कोई बीमारी हो तो डाक्टरों के पास भागी फिरती हो क्योंकि स्वंय का तो प्यार है! परन्तु 1978 में जब माँ बीमार थी, जिस दिन उनका परलोक गमन हुआ उस दिन सुबह दस बजे से लेकर शाम को 5 वजे तक जब तक भाई दफतर से नहीं आया, उल्टी आई यानि माँ का दर्द देखा नहीं जा रहा था, पिता जी थे घर में सलाह करती, डाक्टर को बुलाती, भाई को बुलाती नहीं कुछ नहीं किया मैने जब शाम को भाई 5.15 पर घर आया तब डाक्टर को बुलाया। डाक्टर आए परन्तु टीका लगाते ही उन्होंने तो प्राण भी त्याग दिए, ठीक है शायद वो ठीक नहीं होती। परन्तु कुछ दिन तो और जीवित रह सकती थी, ये घटना तो पहले कभी याद ही नहीं आई। धन्य है ये भूमि! धन्यवाद इस समय के ora का, धन्यवाद श्रीमान जी आपका जो इस तरह का वातावरण पैदा करने में सहयोगी बनते हैं। फिर सभा में पिता जी की ईमानदारी, सत्य बोलने के जोरदार भाव याद आए जो उन्होंने हम सारे बहन भाईयों मे भी पैदा किए। पिता जी का अपने बहन भाईयों के प्रति सहायता करने, हमदर्दी करने चाहे वो धन से हो या तन से हो सब लड़ी की तरह आंखों के सामने आते गए। हम चारो बहन भाईयों को अच्छी ताल्लीम दी। पिता जी ने Eng. को इतना बढ़िया कर दिया। उनकी ईमानदारी के गुण को ग्रहण करके मैने समाज में हमेशा शान से ऊँचा सिर करके जीया है। माता जी दयालु, निस्वार्थी और Punctual थी। बहुत ही सफाई पसन्द थी, बड़ों के लिए उनके हृदय में गहरे सन्मान का भाव था जो मेरे अन्दर भी आया जिससे नौकरी करते समय मुझे इसी सन्मान भाव के कारण अपने seniors से अच्छा सुनने को मिलता। उनकी good books में रहती थी ये सब लड़ी तो खत्म ही नहीं हो रही थी, सभा भी खत्म होने को थी परन्तु मेरा मन अभी भी चाहता था सभा चलती रहे। प्रेरणा उठी कि अब ऋण परिशोध करना है इस कर्ज को अदा करना है।

एक सभा में विशेष लाभ ये हुआ कि अपने जीवन को सुधारने के लिए महान व्यक्तियों के गुण देखने होंगे, ये सभा क्या थी जैसे किसी को कोहीनूर हीरा मिल जाए, वो भी free में, फिर यदि वो उसकी कदर न करे तो वो दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति होगा।

मुझे Madam Vanit जिन्होंने मुझे B.Ed. करने के बाद किसी और के काम आने को कहा था, एक अध्यापिका ने Economics पढ़ाई थी, जिससे मैं M.A. Economics कर सकी। Madam सतिन्द्र ढिल्लों के B.Ed. कालिज में भाव प्रकश से मुझे अपने भैय्या के उपकार नज़र आए। इन सबके उपकार इस सत्संग में नज़र जाए। पर एक गूंगे की तरह मैं सब उपकार बताने में असमर्थ्य हूं।

(अशोका (अम्बाला)

<u>विशेष सन्मान के योग्य मेरे उपकारी श्रीमान जी!</u> कल्याण सत्संग की विशेष सभा में शामिल होकर माता पिता के उपकारों की लड़ियों की लड़ियां सामने आ रही थी, और साथ ही उनके सम्बन्ध में किऐ गऐ पापों, अपराधों, अवज्ञाओं की लड़ियों की लड़ियां भी सामने आ रही थी। मगर जिस तरह एक गूंगा न तो किसी के उपकारों को देख कर बता सकता है और न ही अपनी गल्तियों को महसूस करके ब्यान कर सकता है। इस बार सभा में बैठ कर अपने आप पर लानतें पड़ रही थी।

जहां मां के असंख्यों उपकार मेरे पर हुए हैं इन सबसे ज्यादा जो मां ने मुझे समाज दिखा दी, गुरूमहाराज का दर दिखा दिया। इस उपकार का बदला देना मेरे जैसे वजूद को करीब करीब नामुमकिन है। अगर मैं केवल पिता जी के साथ सेवक बन कर अपने घर बैठ जाता और इस दर की कोई कीमत ना महसूस न करता तो मेरा चण्डीगढ़ आना मुश्किल था क्योंकि जरूरी नहीं था उस महोत्सव पर चण्डीगढ़ आता और अगर मां उस महोत्सव पर चण्डीगढ़ न लेकर आती तो मुझ पापी का अपने आप महोत्सव पर आना नामुमकिन था और अबतक वहीं गंगानगर में रह कर कब का सड़ गल कर खत्म हो गया होता। आज अगर में जिन्दा भी हूं तो उस मां की मेहरबानी का नतीजा है।

इसी सत्संग में आपने एक सभा में फरमाया था कि श्रीमान....जी ने हंसते हंसते बता दिया कि उन्होंने केवल एक ही बार मुर्गी की गर्दन मरोड़ कर मार दिया था, मगर उन श्रीमान जी को आजतक यह पता नहीं चला कि जिस समय उस मुर्गी की गर्दन मरोड़ी जा रही थी उस समय मुर्गी पर क्या गुजर रही थी। उसे कितना दर्द हो रहा था। उसके नर्वस system पर क्या असर पड़ रहा था। उस समय भी मेरा ध्यान मेरी माता की तरफ जा रहा था। मेरी मां जो कि गुरू महाराज की पक्की सेविका थी, पापों को प्रति उनकी कितनी घृणा थी, हम सारे भाईयों के द्वारा किए गऐ नशा खोरी, मांसाहार तथा अन्य गलत कार्यो के द्वारा उनके हृदय पर कितना आघात लगता होगा। उस सभा में बैठ कर मैं महसूस कर रहा था। कि किस प्रकार हम अपनी नीच गतियों के हाथ मां के हृदय को छलनी छलनी करके, जिस प्रकार उस मुर्गी को दर्द होता था उसके नर्वस system पर असर होता था उसी प्रकार मैंने अपनी करतूतों से मां के दिल को दुखाया है ओर उनके नर्वस system पर भी असर डाला है। सभा में बैठ कर भी मां से बार बार मुआफी की प्रार्थना कर रहा था और भी मेरा मन भरा हुआ है और हाथ जोड़ अपनी मां से बार बार माफी मांगता हूं कि मां आपके इस नालायक बेटे ने आपको बहुत सताया है। हो सके तो मुझे माफ कर दो। समाज में आने के बाद जब तक मां जिन्दा रही मैं अपनी योग्यता अनुसार उनकी सेवा करके कोई तिल मात्र उनको ठंडक पहुचाई है मगर गलतियां पहाड़ जैसी हैं और सेवा तिल मात्र है। उनका परिशोध हो ही नही सकता है। मगर मुझे ये भी पता है कि मेरी मां का हृदय बहुत विशाल है वे मुझे माफी जरूर देगी।

मां का नालायक बेटा

जगदीश

ऐसे थे शगुन (चाचा)

मेरे गांव कलालमाजरी (अम्बाला) में श्रीमान करतार सिंह जी गुरू महाराज के जमाने के सेवक थे जो बहुत अच्छा जीवन रखते थे। गुरू महाराज के चरणों में सोलन में बैठे हुओं की तस्वीर भी उनके घर में है। वे एक अच्छे हकीम भी थे और मरीज़ो से कभी कोई पैसा नहीं लेते थे। देसी नुस्खे लिख कर देते थे।

उनके एक भतीज़े थे शगुन सिंह जो बिल्कुल अनपढ़ थे। गांव के रिश्ते में यह मेरे चाचा लगते थे। अनपढ़ होते हुए भी उनके भीतर बहुत अच्छी आत्मिक पूंजी थी और एक बहुत पवित्र जीवन जीते थे। प्राय: 35 - 40 साल पहले हमारे गांव में पानी कुओं से लाया जाता था। एक अच्छे पानी का कुआं गांव के बाहर था। जमींदार लोग सुबह के समय कुछ पानी के घड़े कुएं से भर कर अपने - अपने घरों में रखकर खेतों में काम पर चले जाते थे। ग्रहणियों को काफी किफायत से पानी का इस्तेमाल करना पड़ता था। औरतें कुएं से पानी नहीं लाती थी। छोटे बच्चों के वश की बात नहीं थी कि वे दिन में आवश्यकता पड़ने पर पानी ला सकें। इन शुगन सिंह जी के भीतर इस सम्बन्ध में बहुत सुन्दर सेवा का भाव स्वत: ही पैदा हुआ था। वे दिन में अपने काम से कुछ समय निकाल कर गांव के अनेकों घरों में घूम घूम कर अपनी रस्सी बालटी से कुएं से पानी खेंच कर जरूरत मंद घरों में उनके घड़े भर आते। घर में मुझ जैसे कम उम्र के बालकों को जब कभी माताऐं कम पड़ने पर एकाध बाल्टी पानी भर लाने को कह देती, तो हम स्वंय न लाकर चाचा शगुन सिंह की तलाश कर उन्हें कह देते। इस प्रकार उन्हें घर घर पानी पहुंचाकर बहुत खुशी मिलती थी। बदले में वे किसी खाने पीने की वस्तु की भी लालसा नहीं करते थे। लस्सी के देने पर भी मना ही करते थे। पूर्णत: शाकाहारी और सब प्रकार के व्यसनों से दूरी रखते थे। वे अपने शरीर पर गर्मी के दिनो में कमीज़ भी नहीं पहनते थे। सर्दी के दिनों में एक चादर लपेट कर रखते थे। अधिकतर नंगे पांव ही रहते थे। किसी का कोई नुकसान करना तो क्या ऐसा सोच भी नहीं सकते थे। गांव में चने सरसों का साग तोड़ने के लिए कभी कोई किसी से नहीं पूछता परन्तु ये भद्र पुरूष ऐसे थे कि केवल अपने खेत से ही साग सब्जी लाते थे, किसी अन्य के खेत से कहने पर भी न लेते थे। यहां तक कि खाली पैर खेत के बीच से भी नहीं निकलते थे केवल खेतों की मेढ़ से ही चलते थे। उनके परिवार ने गांव से दूर जगाधरी के पास जमीन ले ली तो विवशत: उन्हें भी गांव छोड़ना पड़ा। उस गांव में वे चले तो गए परन्तु अपने गांव से उनका बहुत लगाव व प्यार रहा। उन्होंने अपने बेटों से कहा कि जब मेरी मृत्यु हो जाए तो मेरा दाह सस्कार मेरी जन्म भूमि मेरे गांव मे ही करना। और ऐसा ही हुआ जब अंतिम समय में वे बिमार हुए तो मौत से चार पांच रोज पहले गांव मे आ गए और वहीं पर अंतिम सांस ली। ऐसे वजूद को हम एक फरिश्ते से कम क्या आकंलन करेंगे। बहुत ऊंचे दर्जे की मानसिक योग्यता रखने वाले, डिग्रियां रखने वाले नीच जीवनधारी घूसखोर, घोटाले बाज, व्यभिचारी, चोर, नशई व मांसाहारी इस अनपढ़ हस्ती के मुकाबले कहां खड़े हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि परलोक में उन्हें अवश्य ऊंचे दर्जे का लोक प्राप्त हुआ होगा। उनके परलोक के जीवन के और अधिक विकास की मंगल कामना करते हुए मैं उन्हें यही श्रद्धांजलि दे सकता हूं। काश! उनके प्रेरणा दायक जीवन से मैं भी कुछ सीख प्राप्त कर सकूं।

(धर्म सिंह चौहान)

भाग्य को भूलिए आगे बढ़िए

भाग्यवादी बनने से कुछ हासिल नहीं होता। व्यक्ति की वैज्ञानिक सोच ही उसे कुछ नया करने को प्रेरित करती है। तरक्की का रास्ता भी वहीं से निकलता है। कुछ ऐसा ही बता रहे हैं ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश।

"अरे राजन, क्या टी ब्रेक में भी किताबी कीड़े बने हुए हो। चलो छोड़ो सब, कैंटीन चलते हैं।"

"यार सोहन, बिना पढ़े कैसे चलेगा, तुम्हें सब पता तो है।"

दरअसल, राजन ने अपनी पढ़ाई और मेहनत से बैंक की प्रतियोगी परीक्षा पास कर के बैंक में नौकरी पा ली लेकिन उस ने शुरू से ही आई.ए.एस. बनने का सपना देखा था। इसीलिए जब भी मौका मिलता आफिस में भी आई.ए.एस. परीक्षा के लिए थोडी बहुत पढ़ाई कर लेता।

"अरे जो होना होगा, वही होगा। तूं चाहे जितना मरजी पढ़ ले। तुझे अगर आई.ए.एस. बनना होगा तो बन ही जाएगा।" सोहन ने कहा तो राजन हंस दिया। यह सोच सभी की है। हम अवैज्ञानिक ढंग से सोचते हैं। तर्क नहीं करते हैं। हमें विश्वास करना सिखाया जाता है। जो होना है वही होगा? मगर हम नहीं करते हैं कि जो होना है वही क्यों होगा? हम जो करेंगे, वैसा क्यों नहीं होगा?

सदेह या तर्क वितर्क करना हमें आता ही नहीं है। यही हमारी अवैज्ञानिकता है।

एक उदाहरण लें। एक डाक्टर हैं। कहीं जाने को तैयार हैं। तभी उस की बेटी छींक देती है। डाक्टर बैठ जाता है और कहता है, "थोड़ा रुक जाइए। बैठ जाइए"।

मित्र पूछता है, "आप डाक्टर हैं। जानते हैं कि छींक क्यों आती है फिर भी आप कहते हैं कि बैठ जाइए।"

इस पर डाक्टर कहता है, "थोड़ा रुक जाने में क्या जाता है?"

यह क्या बताता है? यह बताता है कि डाक्टर विज्ञान पढ़ चुका है। मगर उस की सोच अवैज्ञानिक ही रही है। वह जानता है कि छींक क्यों आती है? फिर भी अंधविश्वास को पकड़े हुए है। अंध विश्वासी सोच ने उसे अवैज्ञानिक बनाए रखा है।

यही अवैज्ञानिक सोच हमारे जनजीवन में रची बसी है। इंजीनियर पुल बनाता है। मकान का निर्माण करता है। मकान बन जाने पर उस पर नीबू मिर्च टंगवा देता है। कहीं मकान को नजर न लग जाए. कहीं टूट न जाए।

जब मकान को नजर लग सकती है तो इंजीनियरिंग किस बात की? उस की पढ़ाई और वैज्ञानिकता किस बात की? इंजीनियर को अपनी विद्या पर विश्वास नहीं है। यही अवैज्ञानिक सोच है। इस सोच ने हमें पिछड़ा और हारा बना रखा है। अतीत में हम सदा क्यों गुलाम रहे? क्या हम कमजोर थे? नहीं हम कमजोर नहीं थे। हम इसलिए हारे, क्योंकि हमारी सोच, अन्यथा कोई कारण नहीं था कि मुट्ठी भर लुटेरे आए, हजारों लोगो के सामने मंदिरों से खजाना लूट ले गए।

मंदिर पर सैकड़ों लोग खड़े थे। वे मंदिर में जो होगा, वही होगा। मंदिर लुटना होगा तो लुटेगा। बचना होगा तो चमत्कार होगा, बच जाएगा।

यदि हम में वैज्ञानिक सोच होती तो मंदिर

नहीं लुटता। बस, जरा सी सोच की बात थी मंदिर पर खड़े लोग भी लुटेरों पर गिर जाते तो वे वहीं दब कर मर जाते मगर इतना सोचता कौन? हम भाग्यवादी जो ठहरे।

हम भाग्यवाद की सोच उतार फेंकते तो मुट्ठी भर व्यापारी हम पर राज नहीं करते। हम ने यही सोच ओढ़ रखी, इसलिए अंग्रेजों से हारे।

अंगरेज एक वैज्ञानिक सोच लिए हुए थे। अंग्रेजों ने तलवार की तुलना मे बंदूक उठाई। अंग्रेज जीत गए। तलवार हार गई नहीं, हमारी अवैज्ञानिक सोच हारी थी।

हमारी सोच थी जो खोज होनी थी, वह हो चुकी है। अब नई खोज नहीं हो सकती है। इसलिए हमारे राजा महाराजाओं ने बंदूके लीं तो अंगरेज तोप ले आए तब बंदूकों के आगे तोपें जीत गई।

जीत बंदूको तोपों की नहीं थी, अंग्रेजों की वैज्ञानिक सोच की थी। वे जानते थे कि जो जितनी तेजी से, जितनी तेज गति से विकास करेगा वह उतना आगे निकल जाएगा।

मगर जब कभी हम विकास की बातें करते हैं तो आध्यात्मिक विकास की ही करते हैं। भौतिक विकास से हम बिदकते हैं। जबकि सब जानते हैं कि बिना रोटी, कपड़े और मकान के विकास नहीं हो सकता है। ये सब भौतिक चीजें हैं।

जब तक भौतिक चीज न हो तो आध्यात्मिक विकास नहीं होगा। तभी तो कहा गया है 'भूखे भजन न होय गोपाल।' बिना भौतिक विकास के आध्यात्मिक विकास कोरी कल्पना है। तब भी हम आध्यात्मिक विकास का पल्ला पकड़े हुए हैं।

आध्यात्मिक विकास के इस मृग-मरीचिका रूपी झुनझुने ने हमारी सोच को अवैज्ञानिक कर रखा है। हम तर्क नहीं करते हैं। संदेह नहीं करते हैं, जो कहा जाता है वह मान लेते हैं। इसी सोच ने हमें अवैज्ञानिक बनाया है।

जब तक यह अवैज्ञानिक सोच रहेगी, तब तक हम हारते और पिटते रहेंगे, यदि हमें विकास करना है तो वैज्ञानिक सोच को अपनाना होगा, हमें भाग्यवाद का पल्ला छोड़ना पड़ेगा। हमें यह तय करना पड़ेगा कि जो होना है वह नहीं होगा। हम जो चाहेंगे वह करेंगे।

हमें नई तकनीक को अपनाना होगा। नए यंत्र लगाने होंगे। नई सोच पैदा करनी होगी। दुनिया के साथ कंधे से कंधा मिला कर चलना होगा, तभी हम विकास कर पाएंगे अन्यथा हाथ धरे, रहने से कुछ नहीं होगा।

यदि जापान की जगह भारत में बम गिरा होता और हिरोशिमा, नागासाकी जैसी तबाही हुई होती तो आज भी हम लंगड़ी लूली संतान पैदा कर रहे होते। मगर जापान उठ खड़ा हुआ। उस ने वैज्ञानिक सोच से हिरोशिमा व नागासाकी का नवशा बदल दिया।

वे जानते थे कि आदमी जो चाहता है, वह कर के बता देता है। विज्ञान से हर चीज संभव है अन्यथा आज हम चांद पर नहीं जा पाते? यह हमारी वैज्ञानिक सोच का नतीजा है कि आज हम राकेट और कंप्यूटर जैसी तकनीक विकसित कर सके हैं।

जब तक हम तकनीकी सोच और वैज्ञानिक तर्कबुद्धि प्राप्त करने का प्रयास नहीं करेंगे तब तक हम यूं ही गरीब, दरिद्र और भिखमंगे बने रहेंगे। क्योंकि वही देश तरक्की कर सकता है जहां की जनता तरक्कीपसंद और विकास को शीघ्र गले लगाती हो अन्यथा हम योग्य होते हुए भी इसी तरह हारते रहेंगे।

(सरिता से साभार)

जीवन प्रसंग

बहुत सालों पहले, एक बुजुर्ग महिला पिट्र्सबर्ग में एक डिपार्टमेंटल स्टोर में सामान की ट्रॉली लिए घूम रहीं थी। महिला के हाव-भाव से सेल्समैन जान गए थे कि उन्हें कुछ खरीदना नहीं है। इसलिए कोई भी सेल्समैन उन पर ध्यान नहीं दे रहा था। जैसे ही महिला किसी काउंटर पर पहुंचती, वहां मौजूद सेल्सपर्सन उन्हें नज़र अंराज़ कर दूसरे कामों में लग जाता।

अंततः वो एक ऐसे कांउटर पर पहुंची, जहां एक नौजवान सेल्समैन, चेहरे पर मुस्कान लिए उनकी तरफ बढ़ा और पूछा, 'मैम, यदि आप कुछ ढूंढ रही हैं, तो क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूं?'

बुजुर्ग महिला ने जवाब दिया, 'नही मुझे कुछ खरीदना नहीं है। मैं तो सिर्फ वक्त गुजार रही हूं। बाहर बहुत बारिश है न इसलिए। जैसे ही बारिश रूकेगी, मैं चली जाऊंगी।'

यह सुनकर भी युवक का रवैया बदला नहीं। उसने बड़े सभ्य तरीके से पूछा, 'ठीक है मैम मैं आपके लिए कुर्सी ले आता हूं। बारिश रुकने तक आप आराम से बैठिए।' इतना कहकर युवक उनका जवाब सुने बिना ही कुर्सी लेने चला गया।

बारिश रुकते ही वो सेल्स मैन न सिर्फ उस महिला को बाहर सड़क तक छोड़ने गया बल्कि उन्हें तहजीब के साथ गुड बाय भी विश किया। जाते-जाते महिला ने उस युवक का विज़िटिंग कार्ड ले लिया।

कुछ महीनों बाद उस स्टोर के मालिक को एक पत्र मिला। उस पत्र में उसी सेल्समैन को स्कॉटलैंड भेजने की बात लिखी थी, जहां उसे घर को फर्निश करने का काम दिया गया था। स्टोर के मालिक ने पत्र का जवाब दिया कि कि यह सेल्समैन आपके काम के लिए उपयुक्त नहीं है क्योंकि यह फर्निशिंग डिपार्टमेंट से नहीं है। बेहतर काम के लिए किसी अनुभवी व्यक्ति को भेज सकते हैं। यदि आप अनुमति दें तो।

पत्र के जवाब में सिर्फ उसी युवक को भेजने की मांग की गई और पत्र पर स्कॉटलैंड के जाने-माने रईस एंड्रयू कारनेजी के हस्ताक्षर थे। वो अपने घर को उस सेल्समैन से फर्निश कराना चाहते थे। स्टोर में बारिश रूकने का इंतज़ार करने वाली वह बुजुर्ग महिला दरअसल एंड्रयू कारनेजी की मां थीं। इसके बाद वो नौजवान फर्निशिंग के काम के लिए स्कॉटलैंड आया। काम के बदले उसे हज़ारों डॉलर मिले। और एक दिन वो उसी डिपार्टमेंटल स्टोर का आधा मालिक बन गया।

एंड्रयू कारनेजी ने कहा है- अगर आपमें खुद को एक कदम आगे ले जाने की प्रेरणा नहीं हो, तो अपने औसत स्वरूप को स्वीकार कर लें।

सच तो है, जो एक कदम अतिरिक्त चल पाते हैं, वे ही तो दूसरों से अलग बनते हैं। सेल्समैन वाले वाक्य से समझिए। उसे पता नहीं था कि वो महिला किसी रसूखदार की मां हैं। वह तो केवल किसी की एक्सट्रा मदद कर रहा था। बाद में जो मिला, वो नसीब ने उसे +1 हुनर के लिए दिया था।

इंसान का हर हुनर उसकी ताकत बनकर हमेशा उसके साथ रहता है। हुनर, मौका मिलते ही मुसीबत और काम के समय अपना काम कर दिखाता है। जैसे कि यदि आपके भीतर ह्यूमर नाम का हुनर है, तो आप किसी भी दुखी व्यक्ति को खुश कर सकते हैं... आगे बढ़कर मदद करने का जज़्बा है, तो किसी की मदद कर सकते हैं.....। अपने काम से अलग कोई भी दूसरा काम सीखने का मौका हाथ लगे, तो झट से लपक लें। न जाने कब यह काबलियत आपके या दूसरों के काम आ जाए।

आलोचना से न हों आहत.....

दुनिया में एक कायदा सालों से चला आ रहा है और वह यह है कि जब भी आप कोई अलग काम करते हैं तो पहले लोग आप पर हंसते हैं, फिर आपका विरोध शुरु कर देते हैं ओर अंत में आपके साथ हो जाते हैं। वैसे भी संयमी व्यक्ति आलोचना का नकारात्मक प्रभाव अपने ऊपर नहीं पड़ने देता। वह देखता है कि उसकी आलोचना क्यों हुई? फिर वह अपनी गलती को सुधारता है और आलोचक को अपना सबसे बड़ा हितैषी मानता है। 'भागो मत, जागो' पुस्तक में इसका बड़ा ही सटीक उदाहरण पढ़ने को मिलता है- एक देश के राष्ट्राध्यक्ष ने पद सम्भालते अपने मुख्य सचिव से कहा कि वह उसके आलोचकों की फेहरिस्त तैयार करें। जिस व्यक्ति ने कभी भी, चाहे थोड़ी सही ही सही उसकी आलोचना की हो उसका नाम इस सूची में होना चाहिए, यह आदेश दिया।

सचिव ने तुरंत सूची तैयार की। अध्यक्ष ने कहा, 'अब जो मेरे कट्टर आलोचक हैं, उनके नाम अलग छांट लो।' सचिव ने ऐसा ही किया। फिर पूछा, 'सर, बताइए इनके साथ कैसा सुलूक किया जाए? और इन्हें क्या सज़ा दी जाए?

राष्ट्राध्यक्ष ने कहा, 'कैसी सज़ा? इन सभी को सम्मानपूर्वक यहां बुलाईए। मैं इन्हें अपना प्रमुख सलाहकार नियुक्त करना चाहता हूं।

यह जवाब सुनकर सचिव को बहुत आश्चर्य हुआ। उसके चेहरे पर छाई प्रश्नों की लकीरें पढ़कर राष्ट्रध्यक्ष ने कहा, 'आज मैं जिस पद पर पहुंचा हूं, उसमें इन लोगों का बड़ा योगदान है। समय समय पर मेरी आलोचना करके यदि ये मुझे सचेत न करते तो शायद इतनी जल्दी मैं इस पद पर नहीं पहुंच पाता। आप भी आलोचना से कभी आहत न हों, बल्कि उसे चुनौती मानकर आगे बढ़ें। अपना आत्मनिरीक्षण करें। अपनी गलतियों को तुरंत सुधारें। आप पाएंगे कि आपने जो सोच रखा था, उसे बड़ी तेज़ी से हासिल कर लिया। अनुचित आलोचना छिपी हुई प्रशंसा है। कोई भी मरे हुए इन्सान को लात नहीं मारता।'

जब डॉ राजेंद्र प्रसाद ने किसान मित्र से दिखाई आत्मीयता

डॉ. राजेंद्र प्रसाद का राष्ट्रपतिकाल पूर्ण होने पर वे पटना के सदाकत आश्रम पहुंचे। उन्हें उस स्थान से अत्यधिक स्नेह था, क्योंकि एक युवा क्रांतिकारी के रूप में वे वहां रह चुके थे। एक दिन उनका एक किसान मित्र किसी केस के सिलसिले में पटना आया था। किसान ने सोचा कि अपने पुराने मित्र राजेंद्र से मिल लेते हैं। देखें, पहचानता है या नहीं? वह सदाकत आश्रम पहुंचा और सिपाही से अंदर जाने के लिए अनुमति मांगी। किसान से सिपाही ने प्रयोजन पूछा। किसान बोला- 'बस, हमें राजेंद्र से मिलना है' सिपाही ने कहा- 'अभी नहीं मिल सकते। साहब आराम कर रहे हैं।' किसान नाराज होते हुए बोला- 'अरे भाई, हम लोग आंदोलन में साथ थे, मिलने दो।' सिपाही ने कहा- 'जाओ-जाओ, सभी ऐसा ही कहते हैं।' तभी राजेंद्र बाबू ने भीतर से किसान मित्र की आवाज पहचानकर उसे अंदर आने देने को कहा। किसान अंदर पहुंचा और यह देखकर हैरान रह गया कि राजेंद्र बाबू बांस की खटिया पर दरी डालकर लेटे हुए हैं। इतने बड़े पद पर रहने के बाद भी राजेंद्र बाबू उसका हाथ पकड़कर रूंआसे होकर कहने लगे-'हम अपने देश के लिए कुछ खास नहीं कर पाए।' किसान ने जब उनके बड़े महत्वपूर्ण राष्ट्रहितकारी कार्यों की चर्चा की, तब भी वे खेद जताते रहे कि हम कुछ नहीं कर पाए। वस्तुत: देश ओर समाज के लिए महत्वपूर्ण योगदान देकर भी स्वयं को अकिंचन मानने की प्रवृत्ति सही मायनों में बड़प्पन का लक्षण है।

व्यस्तता के बावजूद जरूरतमद की मदद की पंडित नेहरू ने

पंडित जवाहरलाल नेहरू भारत के स्वतंत्रता आंदोलन से सक्रिय रूप से जुड़े थे। इस सिलसिले में उन्हें अनेक यात्राएं करनी पड़ती थी। अधिक से अधिक लोगों को इस आंदोलन से जोड़ने के लिए पं० नेहरू अनेक स्थानों पर जाते और अपने भाषणों में लोगों से विनम्र अपील करते थे। उनके, गांधी जी व अन्य लोगों के प्रयासों से स्वतंत्रता प्राप्त हुई। पं० नेहरू की लोकप्रियता के कारण स्वंतत्रता मिलने के बाद वे प्रधानमंत्री बने। पदासीन होने के बाद एक बार उनका कार्यक्रम अहमदनगर की एक सभा में भाषण देने के बाद मलाया जाने का था। वे अहमदनगर पहुंचे और वहां उनके कार्यक्रम के दौरान ही उन्हें एक मलाया निवासी के हाथ की लिखी एक चिट मिली। वह व्यक्ति भारत में आया था और किसी कारण वश मलाया वापस नहीं जा सकता था। उसने चिट में बड़ी विनम्रता से यह लिखा था- 'मेरा पुत्र सख्त बीमार है। उसके लिए एक खास दवा मलाया से मंगवानी है। यदि आप उसे वापसी में लाने का कष्ट करेंगे तो मैं आपका बहुत आभारी रहूंगा।' चिट में उसने अपना नाम तथा पता भी लिखा था। मलाया में अनेकानेक कार्यक्रमों में दिन-रात व्यस्त रहने के बावजूद पं० नेहरू ने दवा लाने की बात नहीं भुलाई। वापसी के समय वे दवा खरीदकर लाए और उसे उस व्यक्ति के पास भिजवा दी। सार यह है कि 'खास' हो जाने के बावजूद हर 'आम' को सहयोग करने का स्वभाव संबंधित की विनम्रता को दर्शाता है और यह अंहकार पर विजय का प्रतीक है।

उपकार के बदले प्रत्युपकार की भावना दिखाई सिंह ने

यह कथा अफ्रीका की है। चूंकि अफ्रीका में बहुत घने वन हैं और उन वनों में जंगली जानवर बहुतायत में होते हैं, इसलिए कई लोग सिंह का चमड़ा पाने के लिए उसे गडढा बनाकर उसमें कैद कर मार देते थे। एक बार सिंह पकड़ने वालों ने अफ्रीका के एक जंगल में सिंह को मारने के लिए ऐसा ही एक गडढा बनाया और उसे ढक दिया। रात में सिंह उसमें गिर पड़ा। तभी एक शिकारी उधर से निकला। उसने देखा कि सिंह गडढे से बाहर निकलने के लिए बार बार उछलता है किंतु गडढे के चारों ओर गड़ीर नोंक वाली लकड़ियों से उसे चोट लगने से वह पुनः गिर जाता है। शिकारी को सिंह पर दया आ गई। उसने एक रस्सी मे दो लकड़ियों को बांधा और पेड़ पर चढ़ गया। पेड़ पर से रस्सी खींचकर उसने लकड़ियां उखाड़ दीं। बीच से लकड़ियां इसलिए नहीं उखाड़ीं कि कहीं गडढे से निकलने पर सिंह उसे मार न डाले। शिकारी की मदद से सिंह बाहर आ गया। थोड़े दिनों बाद शिकारी वन में थककर लेटा था कि तभी एक चीते ने उस पर हमला कर दिया। चीता उसे मारने ही वाला था कि एक सिंह ने चीते पर आक्रमण कर उसे मार दिया। शिकारी समझ गया कि चीते को मारकर सिंह अब उसे मारेगा, किंतु सिंह शिकारी के सामने बैठकर पूंछ हिलाने लगा। शिकारी पहचान गया कि यह वही सिंह है जिसे उसने गडढे में से निकाला था। शिकारी ने स्नेह से सिंह के सिर पर हाथ फेरा और फिर अपने रास्ते चला गया। सार यह है कि उपकार के बदले प्रत्युपकार की भावना होने पर ही सही अर्थो में समजंस्य उपजता है, जिससे समाज की नैतिक सबलता बढ़ती है।

चण्डीगढ़ में सत्संग

18 मार्च, शाम से 24 मार्च शनिवार शाम तक श्रीमान बलदेव सिंह जी ने चण्डीगढ़ में प्रति दिन एक सभा कराई। इन सभाओं में चण्डीगढ़ एवं लोकल सेवक सेविका एवं श्रद्धालु, पंचकूला से धर्म सिंह जी चौहान, उनकी धर्म पत्नी, बेनी प्रसाद जी, और सुभाष जी आकर लाभ उठाते रहे। सब सभाएं उच्च प्रेरणा दायक, प्रभावशाली एवं हितकर साबित हुई जिनका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है।

18 - 3 - 2012 रविवार शाम 5 बजे :-

इस सभा में बताया गया कि हम अपने आस पास के असरों से बच नहीं सकते अर्थात जिस वातावरण में हम रहते हैं और श्वास लेते हैं उसका अच्छा वा बुरा प्रभाव हमारे जीवनों पर आवश्यक रूप में पड़ता है। दूषित वातावरण के प्रभाव से अनेकों बिमारियों की उत्पत्ति होना भी अनिवार्य है जिनके निराकरण करने एंव स्वास्थय लाभ करने के लिए आक्सीजन युक्त वायु, पौष्टिक आहार व शुद्ध जल की आवश्यकता है। इसी प्रकार आत्मा के जीवन के सम्बन्ध में भी यही नियम काम करता है। मनुष्य नहीं जानता कि आत्मा को उसके नीच भाव, नीच अनुराग, नीच चिन्ताएं उसी प्रकार विकृत करते व रोगी बनाते हैं जिस प्रकार कई कारणों से शरीर रोगी बनता है। सात्विक भावों से नीच भाव विनष्ट होते हैं और आत्मा को भला बनाने की राह पर डालते हैं। सृष्टि के सरताज परम पूजनीय भगवान देवात्मा हमें वह मार्ग दिखाना चाहते हैं जो जीवन के सत्य मूल्यों पर अधारित है। वे हमें नीच जीवन से निकाल कर उच्च जीवन की ओर ले जाने वाली दिशा दिखाते हुए सच्चे धर्म मार्ग की राह दिखाते हैं। काश! हम ऐसे धर्म अभिलाषी बन सकें।

19.3.212, सोमवार, बताया कि धर्म की इन्सान को जरूरत इसलिए है कि धर्म के बगैर इन्सान दुखी होता है, और सभी रिश्तों में होता हैं। हर पहलू में ईमानदार व पवित्र रहने से ही उच्च भावों का विकास हो सकता है। परन्तु अपनी बेसुधि की हालत में अपने सुखों के सामने हमें अपने उच्च भावों की तिलांजलि देने में जरा भी देर नहीं लगती। श्रद्धा और सन्मान का केवल दिखावा करते हैं। वास्तव में महान हस्तियां महान नजर नहीं आती। विकासालय अब केवल नकल बनकर रह गया है- जिस प्रकार शरीर के सम्बन्ध में सुन्दर व स्वस्थ दिखने की जागरूकता है, उसी प्रकार आत्मिक जागरूकता जरूरी है।

20.3.2012, मंगलवार :- धर्म का मूल क्या, बड़े-बड़े धर्मवानों पैगम्बरों आदि को भी पता न चल सका तुलसी दास जी ने दया को धर्म का मूल कहा, जबकि धर्म का यह एक भाव या अंग हो सकता है क्योंकि सभी सात्विक भाव धर्म की तह में हैं। देवात्मा ने श्रद्धा भाव को सर्वाधिक महत्व दिया है। श्रद्धा के बगैर कोई पूजा व नमन नहीं हो सकता, कोई महान नहीं दिख सकता और उसके सामने अपना आप तुच्छ नहीं दिखता। धर्म की दुनियां में क्रान्ति की आवश्यकता है और उसका आगाज श्रद्धा भाव के उत्पन्न व विकसित होने से है। भाव भी घटते बढ़ते है। श्रद्धा का भाव अनमोल है। इसकी खुराक उच्च असर व दूसरों के महान जीवन हैं उनके आगे जितना झुक जाएंगे, उतना ही उच्छवास से भर जाएंगे। हमें तो किसी

की सच्ची खूबी भी नज़र नहीं आती, फिर देव रूप तो बहुत बड़ी बात है। श्रद्धा कीमती खजाना है इसे बढ़ाना है।

21.3.2012, बुधवार :- इस सभा का शुभारम्भ करते हुए सभापति जी ने वर्णन किया कि नेचर में कोई हस्ती पूर्ण व आत्मनिर्भर नहीं है अपितु सभी अस्तित्व एक दूसरे पर निर्भर हैं। उच्च हस्तियों के बगैर हम देवात्मा सतगुरू को नहीं जान सकते। देवात्मा और मनुष्यात्मा का फर्क नज़र नहीं आता। हमारे उच्च धर्म सम्बन्धियों यथा श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी व श्रीमान धर्मबल जी जैसी हस्तियों ने धर्म विकासालय का देव ज्योति पाकर जिस कदर संचालन किया और आत्माओं को बदलने व गुरू मिशन से जोड़ने का जो निराला, अदम्य साहसपूर्ण व चिर स्मरणीय कारज किया, उसका कोई सानी नहीं।

जीवन के हर पहलू में हम उपकारियों के अनगिनत उपकारों से लदे पड़े है। उनके कर्ज की अदायगी तो असंभव बात है हम उन्हें स्मरण ही कर ले तो कम से कम कृतज्ञ भाव तो पैदा कर लें। क्योंकि श्रद्धा व कृतज्ञ भाव के बगैर धर्म नहीं आ सकता। अन्य प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष उपकारियों की तो बाते ही क्या, माता-पिता को ही इन्सान भूल जाता है। इब्राहीम लिंकन ने अपने महान बनने का सारा श्रेय अपनी सौतेली माता को दिया था। कृतज्ञ भाव की चार अवस्थाएं है:-

1) कृतज्ञ भाव पैदा करना 2) उपकार स्मरण अर्थात् किस ने मेरे लिए क्या क्या किया। 3) धन्यवाद देना व 4) शीश नवां कर बार बार नमन करना।

श्रीमान जी ने कंवर देवेन्द्र सिंह का उदाहरण दिया। इसके बाद सभापति जी ने जहांगीर का उदाहरण दिया कि किस प्रकार जान बचाने वाले माशकी को एक दिन का राज दे दिया, भामाशाह वा पानाधाय का उदाहरण दिया। सभापति जी ने अपने सम्बन्ध में बताया कि गुरू महाराज ने मुझ अन्धे को माता का रोम रोम उपकारी रूप दिखा दिया।

<u>सभा के अन्त में श्रीमती सुरजीत बराड़ जी</u> ने अपनी बिमारी की अवस्था में अपनी नानी जी से पाई गयी सेवाओं का वर्णन करके उन्हें स्मरण किया। अध्यापकों में श्री बलबीर सिंह जी के पिता जिन्हें ज्ञानी जी कहते थे उन से होस्टल में रहते हुए शिक्षा के सम्बन्ध में पायी गयी सेवाओं का उद्वेलित मन से वर्णन किया। बहनों वा भाईयों से पाई सेवाओं के प्रति धन्यवाद का प्रकाश किया। इसके अतिरिक्त श्रीमान मनोहर लाल जी एवं श्रीमान गिरवर प्रसाद जी से पाये उपकारों का दिल के उदगार से धन्यवाद सहित वर्णन किया।

<u>श्रीमान जगदीश जी ने</u> स्वस्थ शरीर को अपने माता-पिता की घरोहर बताते हुए कहा कि यदि इस शरीर में कोई विकार अथवा दोष आता है तो उसके लिए मैं स्वयं जिम्मेवार हूं। दर्पण का अविष्कार करने वाले एंव नाई द्वारा आदमी का बाहरी रूप दिखाने व संवारने की भूमिका में योगदान के प्रति उपकार का जिक्र करके धन्यवाद का प्रकाश किया। उन्होंने आगे कहा कि केवल, शाब्दिक सेवा (Lipservice) पर्याप्त नहीं है अपितु उपकारियों के प्रति वास्तविक व व्यवहारिक सेवा करना व प्रतिउपकार करना आवश्यक है और मैं

ऐसा प्रयास करूंगा।

22.3.2012 :- भजनः "बचा हूं जिनकी कृपा से उन्हें मैं भूल जाऊं न।"

इस भजन में उद्धत कृतज्ञ भाव की विशेषता को व्याख्यान करते हुए माननीय सभापति जी ने बताया कि कृतज्ञता के बगैर इन्सान अच्छा नहीं बन सकता और न ही उसे जीवन की होश आती है। दूसरी ओर अंह का भाव इतना निकृष्ट भाव है कि इसके नशे में सारी अच्छी पूंजी झुलस जाती है। किसी समाज का अस्तित्व इस बात पर निर्भर करता है कि उसके संचालक कितने कृतज्ञ हैं। हम पर दूसरों की जो मेहरबानियां हुई है, वे कर्जा महसूस हों, यह स्वर्गीय भाव है। श्रीमान नौधसिंह जी पाप के किले थे। उनका परिवर्तन एक अनोखी घटना है। श्रीमान जी ने बताया कि यदि श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी, श्रीमान मेवा सिंह जी व श्रीमान गुरवन्त सिंह जी उनके जीवन में न आते तो मेरे परिवर्तन का प्रश्न ही पैदा न होता। देवात्मा सर्वहित संपादक हैं। जब उनका यह रूप नजर आ जाएगा, सब कार्य अच्छे लगेंगे। हम तो देवात्मा को सताने वाले हैं। देवात्मा के दर तक किस तरह पहुंचे, उस सौभाग्य को हम कदापि न भूलें।

डाक्टर कुमारी प्रेम देवी जी व पं० परमेश्वर दत्त जी के गुरू महाराज के प्रति अनुराग एवं श्रद्धा भाव भी हम याद करें। श्रद्धये श्रीमान देवत्व सिंह जी ने डाकूओं के सरदारों को बदल देने का काम क्या किसी अजूबे से कम है? ऐसे महान कारजों को देखकर श्रद्धा व कृतज्ञता का जितना प्रकाश किया जाए थोड़ा है।

23.3.2012, शुक्रवार :- कहते हैं कि मनुष्य गल्तियो का पुतला है परन्तु यह ठोस हकीकत है कि कोई आदमी स्वंय को गलत नहीं कहता जबकि दूसरों को ही गलत बताता है और दूसरों की ही गल्तियां ब्यान करता है। पूजा पाठ खूब प्रचलित है परन्तु अपना आप दिखाने के लिए नहीं है। शीशे से चेहरे के सुधार का सिलसिला चला। धर्मो में स्वयं को दिखाने की कमी है। देवात्मा ने मनुष्य को कहा है कि तुम अधूरे हो। एक एक गुण को पैदा करके मनुष्य अपने आप को अच्छा मानने लगता है। देव समाज में आकर कोई एकाध व्यसन को छोड़कर स्वयं को महान बना दिखाता है। बाहर की दुनिया में बहुत से लोग व्यसन नहीं करते। इसलिए आठ पाप छोड़ना या न करना धर्म जगत में प्रवेश नहीं है बल्कि इन्सान बने रहने के लिए आवश्यक है। देवात्मा की दुनिया में हमारा वास तभी है जब अपना आप नज़र आए। देव धर्म की विशेषता है और इस की साक्षी है कि अनगणित मनुष्यों को स्वयं का रूप नज़र आने पर वे हितकर और सेवाकारी जीव बने हैं। बाहर के असंख्य धर्म इस के मुकाबले इन्सान को अपना वजूद दिखाने में असमर्थ है क्योंकि धर्मो वाले मनुष्य को सुखी बनाने में लगे हैं जो उसका लक्ष्य नहीं है। देव धर्म उसे शुभ की ओर ले जाने का लक्ष्य रखता है इसलिए यही सत्य धर्म है।

24.3.2012, शनिवार, भजन :- "मुझे मेरी हालत दिखाओ हे भगवन"

इस भजन की सार्थकता का विश्लेषण करते हुए माननीय श्रीमान जी ने ठोस शब्दों में बताया कि इन्सान को उसकी असल हालत दिखाने

पृष्ट 13 का बाकी

Published on 5th of the month
20
मई - 2012
WPP - Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

की एक मात्र सामर्थ्य (Monopoly) देव समाज के पास है। लोग कहते हैं कि कुछ रस्में पूरी करके वे धर्म कर रहे हैं। नशे, मांसाहार, चोरी, हेराफेरी झूठ-तूफान, घूसखोरी व अन्य जघन्य अपराधों की ओर ध्यान नहीं है। केवल मुंह से कुछ भजन पाठ व मंत्र आदि उच्चारण करना ही धर्म मान लिया गया है। कीर्तन पाठ व इस किस्म के कुछ अन्य कहलाने वाले धार्मिक अनुष्ठानों को कर लेने वाले को मान लिया गया कि वह तर गया जबकि सत्य इसके उल्ट है अर्थात नीच जीवन से निकल कर ही कोई तर सकता है। जब तक भीतर नीच शक्तियां वर्तमान हैं तो नीच विचारों के लाने का ही काम करेंगी। अपनी तरफ ध्यान नहीं जाता। देवात्मा की रोशनी मिलने पर ही अपना आप तुच्छ नज़र आ सकता है। ये रोशनी व शक्तियां अन्यत्र नहीं है। दर्पण, एक्सरे, एम.आर.आई, स्कैनिंग आदि सब कुछ बन गया और भी खुशनसीबी की बात है कि खून के टैस्ट से दिल के दौरे का पता चल जाएगा। यह सब ज्ञान तो उपलब्ध है परन्तु अपने आत्मा के स्वरूप को केवल देवात्मा ही दिखा सकते हैं।

जीवन सफल कैसे होगा-एक ही सच्चाई है नीच जीवन से मोक्ष और उच्च जीवन में विकास की। उच्च भाव कैसे पैदा होगें देवात्मा से सम्बन्ध बनाने से। हर रोज अपनी नीच गतियां लिखना आरम्भ करो, वह भी निरन्तर और फिर छः महीने बाद परिणाम देखो निश्चित तौर पर परिवर्तन आएगा।

मनुष्य सभी सम्बन्धों में नीच चिन्ताएं करता है। नीच घृणाएं करता है अंह की गतियां करता है व विभिन्न नीच अनुरागों में लिप्त है। पास से गुजर कर फरिश्ते चले जाते हैं कोई नजर नहीं आता। देवात्मा की ज्योति में ही यह सब कुछ नज़र आ सकता है काश! हम उसे उपलब्ध करने के अधिकारी हो सकें वरना तो अंह, धन, परिवार काम वासना मोह बन्धन सब नाश करने वाले है कोढ़ हैं। देवात्मा के साथ जुडकर ही हमारा भला हो सकता है। इस सौभाग्य को हम अधिक से अधिक प्राप्त कर सकें ऐसी कामना बलवती हो। यह सारा सत्संग का प्रोग्राम बहुत प्रभावशाली रहा। सबने अपनी अपनी योग्यतानुसार लाभ उठाया

(एक सेवक)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts